International Journal for Multidisciplinary Research
Plagiarism & Intellectual Property Rights in Digital Age (PIPRDA-2023)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

भारतीय राजनीति मे महिलाओं की भागीदारी

डॉ आशा सिसौदिया

प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष राजनीति विज्ञान, शासकीय नेहरू स्नातकोत्तर महाविद्यालय आगर मालवा

भारतीय राजनीति में महिलाओं की भूमिका यदि हम वर्तमान परिदृश्य में देखें तो पता चलता है कि राजनीति में महिलाओं की स्थिति ऐसी नहीं है जैसे 20 साल पहले थी। दुनिया का इतिहास इस बात की गवाही देता है कि राजनीति ने लोगों का शोषण किया है राजनीति उन पुरुषों का अखाड़ा है जो कठोर और क्रूर व्यवहार करते रहे हैं। पुरुषों की शारीरिक शक्ति और उसका अहंकार राजनीतिक स्तर पर सर्वत्र दिखाई देता है और यही कारण है कि नरम स्वभाव की महिलाओं की भागीदारी अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कम रही है। स्वतंत्रता के पूर्व राजनीति में महिलाओं की भागीदारी नाम मात्र की थी स्वतंत्रता के उपरांत महिलाओं की राजनीति में भागीदारी में वृद्धि हुई है और इसका श्रेय हमारे भारतीय संविधान को जाता है। जिसमे संविधान की प्रस्तावना में लैंगिक समानता की बात कही है। संविधान में दिए गए मौलिक अधिकार और अंतरराष्ट्रीय समानता का अधिकार अनुच्छेद में स्पष्ट रूप से महिलाओं पुरुषों की समानता की बात कही गई है बल्कि इससे भी आगे महिलाओं के पक्ष में सकारात्मक सोच कायम करने के लिए सशक्त बनाया गया है सरकार द्वारा ऐसी कई योजनाएं बनाई गई है जिनमें महिलाओं का कल्याण एवं विकास हो। 73 और 74 वें संविधान संशोधन के तहत महिलाओं को पंचायत में सीटों एवं नगर निकाय के स्थानीय निकायों में आरक्षण प्रदान किया गया है ताकि महिलाओं की राजनीति में शसक्त भूमिका हो और महिलाओं को भेदभाव का सामना न करना पड़े। वर्तमान में महिलाओं ने घर की सीमा से लेकर शिक्षा के क्षेत्र में साहित्य के क्षेत्र में व्यवसाय के क्षेत्र में राजनीतिक क्षेत्र में फिल्म जगत के क्षेत्र में अंतरिक्ष के क्षेत्र में अपनी योग्यता को पुरुष के समान साबित किया है और अपने लिए स्वयं सम्मानजनक स्थान बनाया है लेकिन आज भी सामाजिक सोच प्रणाली का बदलाव लाने के लिए जमीनी स्तर पर कुछ पहल करनी होगी जिससे ग्रामीण शिक्षित महिलाओं को आगे आने का मौका मिले। विडंबना यह है कि संसद और विधानसभा में एक तिहाई महिला भागीदारी बढ़ाने का विधेयक 1998 से लंबित है।

वर्षवार संसद में महिलाओं की संख्या एवं प्रतिशत

वर्ष	महिला सांसदो की संख्या	महिला सांसदो का प्रतिशत
1951	22	4.50
1957	22	4.45
1962	31	6.28
1967	29	5.58
1971	28	5.41
1977	19	3.51
1980	28	5.29
1984	43	7.95
1989	29	5.48

1991	39	7.30
1996	40	7.37
1998	43	7.92
1999	49	9.02
2004	45	8.29
2009	59	10.87
2014	66	12.15
2019	103	14.36

उपरोक्त आंकड़ों को देखने से पता चलता है कि संसद में महिलाओं की भागीदारी बढ़ रही है लेकिन महिलाओं की भागीदारी के आंकड़े का प्रतिशत गर्व करने वाला नहीं है। खासकर तब जब आदर्श संख्या कम से कम ३३: होनी चाहिए।

भारतीय राजनीति मे महिलाओं की भागीदारी मे चुनौतियाँ-

निरक्षरता- सक्रिय राजनीति में महिलाओं के लिए सबसे बड़ी चुनौती निरक्षरता है। 2014 में संयुक्त राष्ट्र ने बताया कि भारत में महिलाओं का साक्षरता का प्रतिशत 65.46 है जो पुरुषों की साक्षरता दर 82.14% से बहुत कम है। निरक्षरता महिलाओं की राजनीतिक प्रणाली और विभिन्न जटिल मुद्दों को समझने की क्षमता सीमित करती है। यही कारण है कि महिलाओं का मतदाता सूची में नाम छूट जाता है या मतदाता परिचय में कोई त्रुटि सुधार करवाना होता है यह कार्य निरक्षर महिलाओं के लिए अत्यंत कठिन हो जाता है ऐसी स्थिति में क्या हम उम्मीद कर सकते हैं कि भारतीय राजनीति में महिलाएं सक्रिय रूप से सहभागिता करेंगी। मार्शल ने राजनीतिक भागीदारी के बारे में कहा है कि साक्षरता सामान्य रूप से घर से बाहर जाने की क्षमता से जुड़ी है या महिलाओं की अन्य महिलाओं से मिलने और सहयोग करने की क्षमता से भी जुड़ी हुई है। नीरजा जायल और निर्मला बुच द्वारा किए गए अध्ययन में पाया गया है कि पंचायतों में अगर महिलाएं निरक्षर होती है तो महिलाओं का लगातार मजाक उड़ाया जाता है उनका अवमूल्यन किया जाता है अतः महिलाओं के लिए आवश्यक हो जाता है कि उनकी साक्षरता का प्रतिशत बढ़ाया जाए क्योंकि साक्षरता ही है जो उन्हें समाचार पत्रों जैसे संचार तक पहुंच प्रदान करके वे राजनीतिक मुद्दों पर जानकारी प्राप्त कर सकती हैं।

हालांकि भारत के संविधान में जाति और लिंग के बीच लैंगिक असमानताओं को हटा दिया गया है लेकिन भेदभाव महिलाओं की राजनीति भागीदारी में व्यापक बाधा बना हुआ है। भारतीय महिलाएं घर के भीतर कामकाज का बोझ एवं अपने घरेलू कर्तव्य के बोझ तले इतनी दबी है कि वह नेतृत्व हासिल करने के लिए सार्वजनिक स्थान विभिन्न संगठन में शामिल नहीं हो पाती। महिला पुरुष वर्ग भेद और ज्यादा तब बढ़ जाता है जब महिला दलित वर्ग की होती है।

यौन हिंसा.बाल विवाह घरेलू हिंसा और कम साक्षरता दर ने भारतीय महिलाओं के यौन हिंसा को बढ़ावा दिया है 2011 के एक अध्ययन में पाया गया है कि 24% भारतीय पुरुषों ने अपने जीवन में किसी समय यौन हिंसा की है। 20 % ने अपनी सहकर्मियों को यौन संबंध बनाने के लिए मजबूर किया है। 38% पुरुषों ने स्वीकार किया है कि उन्होंने अपने सहकर्मियों का शोषण किया है। मार्था सी नुशबोम का कहना है कि बड़े समाज में हिंसा और हिंसा का खतरा कई महिलाओं की सामाजिक और राजनीतिक संबंधों के कई रूप में सक्रिय समय में भाग लेने की क्षमता को प्रभावित करता है।

निष्कर्ष- आज महिलाओं में नया आत्मविश्वास दिखाई दे रहा है समाज में महिलाओं से संबंधित मुद्दों पर सरकार विशेष जोर दे रही है पिछले कुछ सालों में लगातार महिलाओं की सफलता का प्रतिशत पुरुषों की सफलता से अधिक हो रहा है। हर एक चुनाव में महिलाओं को सफलता पुरुष की तुलना में अधिक मिल रही है। १९७१ में पुरुषों की सफलता का प्रतिशत १८ था जबकि महिलाओं का प्रतिशत ३४: जो पुरुषों की तुलना में लगभग २ गुना था वर्तमान लोकसभा में पुरुषों की सफलता का दर ६७४: है और महिलाओं की सफलता का प्रतिशत १७३: है। वर्तमान में महिला प्रतियोगियों को देखें जाने पर पता चलता है कि जीतने वाली महिलाओं का प्रतिशत राजनीतिक परिवारों से आता है और स्वनिर्मित महिला राजनेताओं के विपरीत पहले से ही पोषित निर्वाचन क्षेत्र है। महिलाओं की राजनीति में भागीदारी की बढ़ती संख्या उत्साहजनक संकेत है। लेकिन इस उत्साह को सतत बनाए रखने के लिए समाज को महिलाओं के प्रति सकारात्मक सोच पर दृढ़ता से चलना होगा साथ ही प्रत्येक परिवार द्वारा बालकों का पालन पोषण इस तरह से किया जाना होगा कि वह महिलाओं को सम्मान दें महिलाओं के हर कार्य में बराबरी से हाथ बटाएं चाहे वह घरेलू कार्य ही क्यों ना हो भारत में पुरुषों को अपनी मानसिकता में भी बदलाव लाने की जरूरत है कि महिलाएं यदि हमारे देश में सुरक्षित नहीं है सम्मानित नहीं है राजनीति में उसकी भागीदारी नहीं है तो परिवार समाज राज्य और राष्ट्र का विकास कभी नहीं होगा। राष्ट्र अपने आप को कभी भी गौरवान्वित महसूस नहीं करेगा अतः आवश्यकता है कि महिलाओं की राजनीति में सक्रिय भागीदारी को संवैधानिक जनादेश के साथ शीर्ष पर रखा जाए जिससे हम और अधिक लैंगिक समानता की ओर बढ़ सके लेकिन इसके लिए जमीनी स्तर पर कुछ पहल करनी होगी ॥

संदर्भ सूची :-

https://Faculty in 7 women-mps-in-ic

Nussbaum Martha c. (July 2005)

“Women’s Bodies: Violence, security and capabilities” Journal of Human Development.

“Indian men most sexuality violent say survey of six developing nations.” Info change women March 2011. Archived from the Original on June 3, 2011 Retrieved 27 March 2014.

National mission for empowerment of women. “Key strategies” Ministry of women and child development. Government of India. Retrieved 23 April 2014.

Government of India “National Policy for the empowerment of women” Retrieved 24 April 2014.